# मेरी पूँछ

तंबान मेलत
द्वितीय वर्ष बी. एससि. (गणित)

मैं डार्विन के 'परिणाम सिद्धांत' के बारे में सोच रहा हूँ। 'मानव बन्दर के परिणाम रूप है'—मैं ने पढा था। क्या मानव के पूर्वज इतने बद्सूरत थे कि उनके शरीर में लंबे-लबे बाल थे? क्या वे वस्त्र पहने बिना चल सकते थे?

—हाँ—हाँ, सोचने पर ही शर्म आती है।

—पर शर्म की बात ही क्या है? अब भी हिप्पि मतवाले और पियक्कड भी दिगंबरी चाल चलते हैं।

'हमारे पूर्वजों के पूँछ भी थी'—मैं ने पढा था। मैं ने मूडकर अपने को देखा। नहीं, पूँछ नहीं होती मेरे शरीर के पीछे। दर असल किसी ने मुझे बालोंवाली पूँछ से बचाया। पर....

—क्या कोई पूँछ है शरीर के बाहर?

—हाँ।

—कहाँ?

—मेरे नाम के अंत में!!

जानवरों की पूँछ उन्हें कीडों से बचाती है। इनकी पूँछ मच्छर को दूर भगाती है।

—क्या मेरी पूँछ मुझे मच्छरों से बचाती है?

—वह क्या मुझे किसी झंझटों से बचाती है?

—नहीं। फिर! फिर तो....

वह मेरी सहायता करती है, वह मुझे बचाती है विश्वविद्यालय के प्रवेश से, जीविका के रूप में 'नौकरी' का भार ढोने से।

'इस तरह की पूँछ को मैं काटूँगा'—मैं ने निश्चय किया। मेरा नाम एक कागज़ के टुकडे पर लिख डाला और उसके बाद जो शब्द है—जिसे मैं पूँछ कहता हूँ—उसे बडे क्रोध के साथ कलम से काट डाला।

पूँछ काटने में मैं सफल हुआ।

दूसरो से मेरा नाम मैं ने पूँछ काटकर बताया।

एक 'क्लार्क' को 'वेकन्सी' के संबन्ध में अखबार में देखा तो मैं प्रसन्न होकर आवेदन पत्र लिखने चला। 'फोर्म' के स्तंभों को पूरा करते समय एक 'कोलम' में देखा—धर्म का नाम; दूसरे में—जाति का नाम और तीसरे में—उपजाति का विवरण। मैं इन बातों के प्रमाण पत्र नकल करने लगा। बात अचरज की ही निकली कि मेरे नाम के अंत में जो पूँछ होती थी वह ज्यों का त्यों खडी रही।

चौंक के नाते मैं कुर्सी में ही गिर पडा।

—मेरे घमड का क्या अर्थ है? घमंड दूर रहा, पूँछ पास रही।

—मेरे पुरुषत्व को स्थान कहाँ है?

"किस तलवार से उस पूँछ को काट सकूँगा"—मैं ने सोचा।

—क्या काटेगी इन्द्र के वज्रायुध से?

—क्या विष्णु का सुदर्शन चक्र लाने की जरूरत पडेगी?

"किसी से फायदा नहीं होगा" मेरी पूँछ सक्रिय सच बोली। मेरे जन्म के पहले ही यह पूँछ 'रिकार्ड' में प्रतिष्ठित हुई थी। भाषण तो अनेक सुनता है पूँछ काटने के बारे में। तो भी पूँछ ऐसी-वैसी है।

मैं ने पूँछ में तेल डालकर सजीव बनाने का निश्चय किया। पूँछवालो के एक दल की अनिवार्यता, मैं ने लोगों को समझा दी—समाज के अन्याय के, पक्षपात के, विरुद्ध आन्दोलन चलाने के लिये। खाली जेब में कागज़ के टुकडे भर दिये। पेट में भूख का कराहने पर भी दूसरो को कृत्रिम हँसी प्रदान करके करके खुशी का बधना किया। काली आँधी और घोर वर्षा के बीच में भी नाव को पार पहुँचाने के लिये कमर बाँधा। तब मुझे लगा कि पूँछ ही मेरा पथप्रदर्शक है।